कार्यक्रम प्रतिवेदन
दो दिवसीय "अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी"
विषय: "विकसित भारत-2047 में सरकारी कार्यालयों की भूमिका"
दिनांक: 24 - 25 जुलाई 2025
स्थान: सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क (इन्फ्लिबनेट) केंद्र, गांधीनगर, गुजरात

प्रस्तावना

सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क (इन्फ्लिबनेट) केंद्र, गांधीनगर, गुजरात, गांधीनगर स्थित गांधीनगर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के सहयोग से 24 एवं 25 जुलाई 2025 को केंद्र में "विकसित भारत-2047 में सरकारी कार्यालयों की भूमिका" विषय पर, दो दिवसीय "अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी" का सफल आयोजन किया। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, साहित्यिक विमर्श तथा अकादमिक विचारों का आदान-प्रदान था। यह आयोजन समस्त गुजरात के राज्य और केंद्र सरकार के विभिन्न सरकारी कार्यालयों के 100 से अधिक प्रतिभागियों और इन्फ्लिबनेट केंद्र के कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता से सम्पन्न हुआ।

प्रथम दिवस (24 जुलाई 2025)

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ, जिससे सभागार में एक आध्यात्मिक और अकादमिक वातावरण का निर्माण हुआ। इसके पश्चात, अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी के संयोजक, श्री हरीश चंद्र जी, प्रशासनिक अधिकारी (कार्मिक एवं प्रशासन), इन्फ्लिबनेट केंद्र, ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और अपना स्वागत भाषण दिया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में संगोष्ठी के विषय "विकसित भारत-2047" की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है और हिंदी संपर्क भाषा के रूप में सभी को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। इसके बाद डॉ. सुरभि, वैज्ञानिक-सी (पुस्तकालय विज्ञान) एवं संगोष्ठी की सह-संयोजिका, द्वारा कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

उद्घाटन सत्र के गणमान्य अतिथियों में माननीय प्रोफेसर शैलेन्द्र सराफ, निदेशक, नाईपर अहमदाबाद (मुख्य अतिथि); माननीय श्री सुनील सिन्हा जी, महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, गांधीनगर (सम्मानित अतिथि); माननीय श्री हरीश सिंह चौहान जी, उपनिदेशक, राजभाषा कार्यान्वयन; एवं माननीय प्रोफेसर देविका पी मडाल्ली, निदेशक, इन्फ्लिबनेट केंद्र, उपस्थित थे।

- **माननीय श्री सुनील सिन्हा जी का उद्बोधन:** कार्यक्रम को अद्भुत बताते हुए श्री सिन्हा जी ने कहा कि नराकास गांधीनगर को एक इंडस्ट्री के रूप में तुलना किया, जिसमें देश के हर क्षेत्र के कार्यालयों की भागीदारी है। यह देश ‘अखंडता में एकता को दर्शाता है। उन्होंने आगे बैंकिंग जैसे ग्राहक-केंद्रित क्षेत्र में हिंदी के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि हिंदी न केवल राजभाषा नीति का एक अनिवार्य हिस्सा है, बल्कि यह वित्तीय समावेशन और ग्राहकों के साथ बेहतर संबंध स्थापित करने का एक शक्तिशाली माध्यम भी है।
- **माननीय श्री हरीश सिंह चौहान जी का उद्बोधन:** श्री चौहान जी अपने भाषण में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार कि ओर से हार्दिक अभिनंदन करते हुए, सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को औपचारिकता से निकालकर सहज और स्वाभाविक बनाने पर बल दिया। उन्होंने राजभाषा का अर्थ बताते हुए कहा कि यह सहज, सरल, और शुद्ध हो, जो कि आमजन को समझ आए। उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार में फिल्मी दुनिया और संगीत के योगदान को सराहा, इसे सरकारी प्रयासों से अधिक प्रभावी बताया। श्री चौहान ने ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा को विकसित भारत की नींव बताया, और सभी से अपना कार्य पूरी लगन से करने का आग्रह किया। अंत में, उन्होंने इस अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की सराहना कि और आशा जताई कि यह संगोष्ठी में विचार मंथन से हिंदी कि बढ़ावा के लिए अमृत निकलेगा, और सभी से इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने का निवेदन किया।
- **माननीय निदेशक प्रोफेसर देविका पी मडाल्ली जी का उद्बोधन:** प्रो मडाल्ली ने भाषा को संस्कृति और संचार की एक महत्वपूर्ण कड़ी बताया। उन्होंने हिंदी के वैश्विक महत्व पर जोर दिया, जो दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, और भाषा शिक्षण को आनंददायक व सामाजिक कौशल बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रोफेसर मडाल्ली ने इन्फ्लिबनेट केंद्र की पहलों पर प्रकाश डाला, जिनमें भारतीय भाषा में यूनियन कैटलॉग - ‘भारतकैट’ और क्षेत्रीय 'गुजकैट' जैसी परियोजनाएं शामिल हैं, जो भारतीय भाषाओं में ज्ञान और संवादात्मक शिक्षण को बढ़ावा देती हैं। उनका संबोधन डिजिटल युग में प्रभावी संचार और भाषा शिक्षा के भविष्य पर केंद्रित रहा। अंत में उन्होंने हिंदी के प्रचार प्रसार में नराकास के कार्यों की काफी सराहना करते हुए अपने वक्तव्य का समापन किया।
- **माननीय मुख्य अतिथि प्रोफेसर शैलेन्द्र सराफ जी का उद्घाटन भाषण:** प्रोफेसर शैलेंद्र सराफ ने अपने प्रेरणादायक उद्बोधन में इन्फ्लिबनेट केंद्र के कार्यों और उसकी निदेशक, प्रोफेसर देविका मडाल्ली के नेतृत्व की सराहना की। उन्होंने विशेष रूप से ई-गवर्नेंस और ज्ञान साझाकरण में इन्फ्लिबनेट के योगदान की सराहना की। प्रोफेसर सराफ ने ‘विकसित भारत 2047’ की परिकल्पना पर गहराई से विचार करते हुए कहा कि २०० साल पहले जो भारत का यश था, वही

वास्तव में २०४७ तक पाना हमारी लक्ष और आशा है। उन्होंने याद दिलाते हुए कहा कि भारत का इतिहास वैश्विक जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान का रहा है, और हमें उस गौरव को फिर से हासिल करना है। उन्होंने भाषा के महत्व पर बल देते हुए इसे लोगों को आपस में जोड़ने और संवाद स्थापित करने का प्राथमिक साधन बताया। उन्होंने हिंदी सहित सभी भाषाओं के सम्मान की वकालत की और प्राचीन उक्ति "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" का उद्धरण देते हुए अपनी भाषा के महत्व को रेखांकित किया और कहा कि जीवन और कार्य में सकारात्मकता और उत्सव के माहौल को अपनाने की प्रेरणा दी, ताकि हमें अपने छोटे-छोटे योगदानों के लिए भी गर्व महसूस हो सके। उन्होंने भारत की समृद्ध प्राचीन ज्ञान परंपरा जैसे आयुर्वेद और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों के गौरव का उल्लेख किया, जो कभी वैश्विक शिक्षा और वित्तीय प्रबंधन के केंद्र थे। अंत में, प्रोफेसर सराफ ने सभी उपस्थित लोगों से अपने अर्जित ज्ञान का उपयोग राष्ट्र निर्माण में करने और अपने देश को और सुंदर बनाने के लिए योगदान देने का आग्रह किया, क्योंकि यह वर्तमान पीढ़ी का प्रमुख कर्तव्य है। अंत में अपना आभार प्रकट करते हुए, सभी श्रोताओं से नराकास से जुड़ने का आग्रह जताया।

सत्र का समापन डॉ. सुरभि द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

आमंत्रित वार्ता

श्री कृतार्थ झाला, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, एनएफएसयू (NFSU) गांधीनगर
विषय : साइबर स्पेस

अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी में व्याख्यान सत्र की शुरुआत एनएफएसयू गांधीनगर के वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, श्री कृतार्थ झाला, के "साइबर स्पेस" पर प्रस्तुति के साथ हुई।

श्री पुष्पेंद्र गौर एवं श्री आशीष पाल (विषय: ड्रोन डेटा विश्लेषण)

श्री पुष्पेंद्र गौर, क्षेत्रीय खान नियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर, गुजरात, अपने व्याख्यान में ने ड्रोन तकनीक के व्यावहारिक अनुप्रयोगों को प्रस्तुत किया।

प्रथम तकनीकी सत्र

अध्यक्ष: श्री मनोज कुमार के एवं श्री आनंद प्रकाश

१. "2047 का विकसित भारत: क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद का योगदान, वैद्य जयप्रकाश राम, अनुसंधान अधिकारी (आयुर्वेद), क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद"

वैद्य जयप्रकाश राम ने अपने वक्तव्य में बताया कि भारत ने अतीत में ही विकास की उन ऊंचाइयों को छू लिया था, जिसे हम अब फिर से प्राप्त करना चाहते हैं।

२. विकसित भारत 2047 में सरकारी कार्यालयों की भूमिका, डॉ. नीलिमा अग्रवाल एवं डॉ. रितेश कुमार, सहायक प्रोफेसर , भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान सूरत, गुजरात

डॉ. नीलिमा अग्रवाल ने खुशहाल विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय संकल्प को समावेशिता, आत्मनिर्भरता और नवाचार पर आधारित बताया। उन्होंने सरकारी कार्यालयों में डिजिटलीकरण की प्रगति और इसके माध्यम से सेवाओं के सरलीकरण का उल्लेख किया, जिससे ग्राम पंचायतें भी डिजिटल रूप से जुड़ रही हैं।

३. विकसित राष्ट्र की दिशा में विज्ञान एवं अंतरिक्ष तकनीकी की भूमिका - जितेंद्र कुमार, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद, गुजरात

अपने वक्तव्य में जितेंद्र कुमार ने बताया कि कैसे भारत, जो कभी भोजन के लिए संघर्ष करता था, उस देश ने विक्रम साराभाई की दूरदृष्टि से इसरो (ISRO) का निर्माण किया और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में विश्व में अपनी पहचान बनाई।

४.विकसित भारत विजन 2047 में आयकर की भूमिका - आनंद सिंह राठौर, सहायक आयुक्त, आयकर विभाग, अहमदाबाद

अपनी प्रस्तुति में आनंद सिंह राठौर ने "विकसित भारत विजन 2047 में आयकर की भूमिका" पर जोर देते हुए कहा कि विकसित भारत की कल्पना, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा किया गया था।

५. विषय: विकसित भारत 2047 की दिशा में राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय की बहुआयामी भूमिका - डॉ. प्रियंका कक्कड़, NFSU

राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय (NFSU), गांधीनगर की सहायक प्राध्यापिका डॉ. प्रियंका कक्कड़ ने "विकसित भारत 2047 में राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय की बहुआयामी भूमिका" पर अपना उद्बोधन दिया।

प्रथम पोस्टर सत्र

अध्यक्षः श्री स्वप्निल पटेल, वैज्ञानिक-डी (सीएस), इनफ्लिबनेट केंद्र

इस सत्र में कुल 10 पोस्टर प्रस्तुत किए गए, जिनमें समाज, कृषि, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य और तकनीक जैसे विषयों पर काम किया गया था।

द्वितीय तकनीकी सत्र

अध्यक्षः श्री यात्रिक पटेल, वैज्ञानिक-ई (सीएस)/श्री दिनेश प्रधान, वैज्ञानिक-डी (एलएस), इनफ्लिबनेट केंद्र

६. डिजिटल ट्विन्सः परमाणु रिएक्टर के लिए वरदान - प्रतिभा गुप्ता, प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान

प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक अधिकारी सुश्री प्रतिभा गुप्ता ने "डिजिटल ट्विन्सः परमाणु रिएक्टर के लिए वरदान" पर प्रकाश डाला।

७. डिजिटल परिवर्तनः सरकारी कार्यों में दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ाना - सरवन जीत सिंह एवं राहुल आहूजा, गेल (इंडिया) लिमिटेड

गेल (इंडिया) लिमिटेड के सरवन जीत सिंह ने "डिजिटल परिवर्तनः सरकारी कार्यों में दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ाना" पर बात की, जिसमें उन्होंने सरकारी कार्यों में डिजिटल बदलाव के व्यापक प्रभावों पर प्रकाश डाला।

८. राजभाषा के विकास में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की भूमिका - प्रीति अग्रवाल, अध्यक्षा, आई.ई.टी.ई., अहमदाबाद

आई.ई.टी.ई., अहमदाबाद की प्रीति अग्रवाल ने "राजभाषा के विकास में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की भूमिका" पर अपने विचार साझा किए।

९. विकसित भारत के लिए उच्च गति प्रकाशीय उपग्रह आधारित संचार की आवश्यकता और भूमिका - विकास अग्रवाल, SAC, ISRO

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (SAC) के विकास अग्रवाल ने "विकसित भारत के लिए उच्च गति प्रकाशीय उपग्रह आधारित संचार की आवश्यकता और भूमिका" पर प्रकाश डाला।

१०. विकसित भारत बनाने में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का योगदान - दिनेश कुमार अग्रवाल, वैज्ञानिक SG, SAC-ISRO

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र-इसरो के वैज्ञानिक दिनेश कुमार अग्रवाल ने "विकसित भारत बनाने में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का योगदान" पर प्रकाश डाला, जिसमें उन्होंने डॉ. विक्रम साराभाई को श्रद्धांजलि दी।

११. राजभाषा (हिंदी) के विकास में एआई का योगदान - विष्णु कुमार सेन, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद के तकनीशियन विष्णु कुमार सेन ने "राजभाषा के विकास में एआई का योगदान" पर अपने विचार रखे।

सांस्कृतिक संध्या

हिन्दी संगोष्ठी के प्रथम दिवस का समापन एक मनमोहक सांस्कृतिक संध्या के साथ हुआ। कार्यक्रम में शास्त्रीय नृत्यों की एक शानदार श्रृंखला देखने को मिली, जिसमें ओडिसी, मोहिनीअट्टम और भरतनाट्यम की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इसके उपरांत, ओजस्वी कविता-पाठ और मधुर गायन ने वातावरण में एक नया रंग भर दिया। संध्या का चरमोत्कर्ष ऊर्जावान गरबा नृत्य के साथ हुआ, जिसकी पारंपरिक धुन ने पूरे सभागार में उत्साह का संचार कर दिया।

द्वितीय दिवस (25 जुलाई 2025)

तृतीय तकनीकी सत्र

अध्यक्ष: श्री पुष्पेन्द्र गौर, उप खान नियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर /श्री विकास पाल, वैज्ञानिक सी (सी.एस.), इनफ्लिबनेट केंद्र

आमंत्रित वार्ता

डॉ. ब्रज किशोर शुक्ला, प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान

विषय : प्लाज्मा - विकसित भारत में स्वच्छ ऊर्जा का अनंत स्रोत

प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. ब्रज किशोर शुक्ला ने "प्लाज्मा - विकसित भारत में स्वच्छ ऊर्जा का अनंत स्रोत" पर चर्चा की, जिसमें उन्होंने जीवाश्म ईंधन के सीमित और हानिकारक प्रभावों के बीच बढ़ती ऊर्जा खपत की चुनौती को उजागर किया।

१२."विकसित भारत 2047" के संकल्प में सरकारी ई-मार्केटप्लेस (जेम) की भूमिका का तुलनात्मक विश्लेषण - रितेश सुगंधी, प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान

प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान के रितेश सुगंधी ने "विकसित भारत 2047 के संकल्प में सरकारी ई-मार्केटप्लेस (जेम) की भूमिका का तुलनात्मक विश्लेषण" प्रस्तुत किया।

१३. नागरिक–केन्द्रित शासन: डिजिटल परिवर्तन और जन सहभागिता के माध्यम से उत्तरदायी प्रशासन की ओर, खुशबू सिंह, अधीक्षक, सहायक आयुक्त का कार्यालय, मंडल-VII (सेटेलाइट), सेंट्रल जी.एस.टी., अहमदाबाद

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर विभाग की खुशबू सिंह ने "नागरिक-केन्द्रित शासन: डिजिटल परिवर्तन और जन सहभागिता के माध्यम से उत्तरदायी प्रशासन की ओर" विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

१४. अंतरिक्ष अनुसंधान में एआई (AI) और नवाचार की बढ़ती हुई भूमिका - देवांग मांकड़, प्रधान, एनडीपीडी/एमडीपीजी/सीपा, ISRO, अहमदाबाद

इसरो (ISRO) अहमदाबाद के देवांग मांकड़ ने "अंतरिक्ष अनुसंधान में ए.आई. और नवाचार की बढ़ती हुई भूमिका" पर व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने इसरो की उपलब्धियों को रेखांकित किया, जैसे 101 लॉन्च मिशन और 433 विदेशी व 135 स्वदेशी उपग्रहों का प्रक्षेपण।

आमंत्रित वार्ता

डॉ. अभिषेक कुमार, वैज्ञानिक ई (सीएस), इनफ्लिबनेट केंद्र

विषय : इनफ्लिबनेट सेवाएँ और गतिविधियां

इनफ्लिबनेट केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. अभिषेक कुमार ने इनफ्लिबनेट की गतिविधियों और सेवाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने इनफ्लिबनेट की यात्रा को 1990 के दशक में लाइब्रेरी ऑटोमेशन (सोल सॉफ्टवेयर) से शुरू करते हुए, आज के ई-शोध सिंधु (वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन के तहत 13,000+ जर्नल्स तक पहुँच प्रदान करना) तक समझाया।

चतुर्थ तकनीकी सत्र

अध्यक्ष: श्री सर्वेश कुमार तिवारी- मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, टॉलिक सचिव / श्री धर्मेश शाह, वैज्ञानिक बी (सीएस), इनफ्लिबनेट केंद्र

१६. भारत में ई-शासन की रीढ़: इलेक्ट्रॉनिक सेवा प्रदायगी के माध्यम से नागरिक सशक्तिकरण - प्रियंका वर्मा, प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान

प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान की प्रियंका वर्मा ने "भारत में ई-शासन की रीढ़: इलेक्ट्रॉनिक सेवा प्रदायगी के माध्यम से नागरिक सशक्तिकरण" पर व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए ई-गवर्नेंस और डिजिटल सेवाओं की केंद्रीय भूमिका को स्पष्ट किया।

१७. विकसित भारत 2047 हेतु ऊर्जा आत्मनिर्भरता और वैज्ञानिक नवाचार में प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान (IPR) का योगदान - सचिन कुमार, प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान

प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान (IPR) के सचिन कुमार ने "विकसित भारत 2047 हेतु ऊर्जा आत्मनिर्भरता और वैज्ञानिक नवाचार में प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान का योगदान" विषय पर व्याख्यान दिया।

१८. विकसित भारत-2047: सरकारी कार्यालयों की भूमिका में अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का व्यापक योगदान , मनीषा गुप्ता, वैज्ञानिक एवं के० एन० बाबू, अभियंता, एस० एफ़०, बी०ओ०डी०, ए०ओ०एस०जी०, ए०प०स०आ०, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इ०स०रो०, अहमदाबाद

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, ISRO, अहमदाबाद की मनीषा गुप्ता ने "विकसित भारत-2047: सरकारी कार्यालयों की भूमिका में अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का व्यापक योगदान" पर प्रकाश डाला।

१९. राजभाषा के विकास में AI की भूमिका - भवानी शंकर, कार्यकारी प्रशासन, इनफ्लिबनेट केंद्र, गांधीनगर

इनफ्लिबनेट केंद्र के भवानी शंकर, ने "राजभाषा के विकास में AI की भूमिका" पर संक्षिप्त चर्चा की। उन्होंने बताया कि AI का उपयोग हिंदी के लिए कई क्षेत्रों में हो सकता है, जैसे मशीन ट्रांसलेशन, कंटेंट जनरेशन, शब्दकोश विकास, और सांस्कृतिक ।

द्वितीय पोस्टर सत्र

अध्यक्ष: श्री दिनेश प्रधान, वैज्ञानिक-डी (एलएस), इनफ्लिबनेट केंद्र, गांधीनगर

इनफ्लिबनेट केंद्र के वैज्ञानिक डी (एलएस), श्री दिनेश प्रधान, ने पोस्टर सत्र का विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिसमें पाँच पोस्टर प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। पहली प्रस्तुति, मनीष कुमार द्वारा, कृषि विकास और किसानों की आय वृद्धि के लिए सरकारी योजनाओं और बैंकों की भूमिका पर केंद्रित थी।

पाँचवा तकनीकी सत्र

अध्यक्ष: श्री एच.के. शर्मा, संयुक्त रजिस्ट्रार, आईआईटी (IIT) गांधीनगर / श्री रंजन पाठक, मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा

२०. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का 2047 के विकसित भारत में योगदान - आशीष सोनी, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो, अहमदाबाद

इसरो अहमदाबाद के आशीष सोनी ने "भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का 2047 के विकसित भारत में योगदान" पर व्याख्यान दिया। उन्होंने इसरो की स्थापना से लेकर आज तक की सफलताओं को बताया, जिसमें SLV से GSLV मार्क III तक की प्रक्षेपण क्षमता और 101 से अधिक मिशन शामिल हैं।

२१. कौशल विकास और क्षमता निर्माण - सरकारी कर्मचारियों को भविष्य के लिए तैयार करना, सोनम सोनकर, प्रशिक्षण अधिकारी / राजभाषा अधिकारी , राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान (महिला),वड़ोदरा,शांतिनगर ,तरसाली,वड़ोदरा

राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान (महिला), वड़ोदरा की प्रशिक्षण अधिकारी/राजभाषा अधिकारी सोनम सोनकर ने "कौशल विकास और क्षमता निर्माण - सरकारी कर्मचारियों को भविष्य के लिए तैयार करना" विषय पर बात की।

२२. ब्लॉकचेन-एकीकृत एआई: विकसित भारत 2047 की दिशा में भारतीय शासन का नया स्वरूप, अरविंद कुमार मिश्र, वैज्ञानिक सहायक -बी (मल्टीमीडिया), अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद के अरविंद कुमार मिश्र ने "ब्लॉकचेन एकीकृत एआई विकसित भारत 2047 तक की दिशा में भारतीय शासन का एक नया स्वरूप" पर प्रस्तुति दी।

२३. अनुसंधान और विकास में विश्लेषणात्मक उपकरणों की भूमिका, डॉ. गोपाला राम भादू, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर - केंद्रीय नमक और समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर

सीएसआईआर - केंद्रीय नमक और समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. गोपाला राम भादू ने "अनुसंधान और विकास में विश्लेषणात्मक उपकरणों की भूमिका" विषय पर व्याख्यान दिया।

२४. विकसित भारत 2047 की दिशा में अंतरिक्ष नीति का विकास: राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय नीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण - पूजा श्रीवास्तव, प्रणव प्रकाश सिंह, जयेश ठक्कर, प्रधान, ऍम्प्लिफायर विभाग, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो, अहमदाबाद

इसरो अहमदाबाद की पूजा श्रीवास्तव ने "विकसित भारत 2047 की दिशा में अंतरिक्ष नीति का विकास: राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय नीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण" पर व्याख्यान दिया।

छठा तकनीकी सत्र

अध्यक्ष: डॉ. अभिषेक कुमार, वैज्ञानिक ई (सीएस), इनफ्लिबनेट केंद्र /डॉ. मितेशकुमार पंड्या- उप-पुस्तकालयाध्यक्ष (एनएफएसयू)

२५. भारत के विकास की गति में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका - डॉ. भूपेन्द्र मरकाम, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर - केंद्रीय नमक और समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर

सीएसआईआर - केंद्रीय नमक और समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. भूपेन्द्र मरकाम ने "भारत के विकास की गति में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका" पर व्याख्यान दिया। उन्होंने ऊर्जा, पर्यावरण, कृषि और ग्रामीण विकास में सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई द्वारा विकसित तकनीकों पर जोर दिया।

२६. भारत के विकास की गति में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका - अभिषेक बारहठ, राजभाषा अधिकारी, पंजाब नेशनल बैंक

पंजाब नेशनल बैंक के राजभाषा अधिकारी, अभिषेक बारहठ, ने "भारत के विकास की गति में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका" पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी।

२७. डिजिटल परिवर्तन: सरकारी कार्यों में दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ाना - रंजन परनामी, वैज्ञानिक/अभियंता, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो, अहमदाबाद

इसरो अहमदाबाद के वैज्ञानिक/अभियंता, रंजन परनामी, ने "डिजिटल परिवर्तन: सरकारी कार्यों में दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ाना" विषय पर व्याख्यान दिया।

२८. विकसित भारत 2047 में अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का योगदान - सुनील सिंह, तकनीकी अधिकारी, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो, अहमदाबाद

इसरो अहमदाबाद के सुनील सिंह ने "विकसित भारत 2047 में अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का योगदान" पर प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष विज्ञान भारत की आत्मनिर्भरता, तकनीकी क्षमता और वैश्विक नेतृत्व में एक प्रेरक शक्ति बन गया है, जिसमें 500 से अधिक स्वदेशी और विदेशी उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण शामिल है।

२९. विकसित भारत 2047 में सरकारी कार्यालयों की भूमिका - विश्व मोहन, वैयक्तिक सहायक, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो, अहमदाबाद

इसरो अहमदाबाद के विश्व मोहन ने "विकसित भारत 2047 में सरकारी कार्यालयों की भूमिका" पर बात की। उन्होंने सरकारी कार्यालयों की प्रशासन में केंद्रीय भूमिका पर जोर दिया, विशेष रूप से नीतियों को जमीनी स्तर पर लागू करने में। मोहन ने सुशासन और ई-शासन को महत्वपूर्ण स्तंभ बताया, जिसमें ई-ऑफिस, ई-अपार, ई-लर्निंग, आरटीआई और सीपीग्राम्स जैसे डिजिटल पहल शामिल हैं, जो पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाते हैं।

३०. आजादी के अमृतकाल में राजभाषा: लक्ष्य, चुनौतियाँ और समाधान - जगदीश कुमार, सहायक प्रबंधक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय राजकोट

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, राजकोट के जगदीश कुमार ने "आजादी के अमृतकाल में राजभाषा: लक्ष्य, चुनौतियाँ और समाधान" पर व्याख्यान दिया।

समापन सत्र

अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी 2025 का समापन समारोह बड़े ही उत्साह और भव्यता के साथ संपन्न हुआ। समारोह का आरंभ मुख्य अतिथि, श्री रणजीत कुमार झा, महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रमुख, केनरा बैंक, गुजरात, तथा प्रोफेसर देविका मडाल्ली, निदेशिका, इनफ्लिबनेट केंद्र, गांधीनगर, सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों के स्वागत के साथ हुआ। संगोष्ठी के संयोजक, श्री हरीश चंद्र जी ने सभी अतिथियों का हार्दिक अभिनंदन किया और निदेशिका प्रोफेसर देविका मडाल्ली के मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन के लिए आभार व्यक्त किया।

श्री सर्वेश कुमार तिवारी, सदस्य सचिव, नराकास गांधीनगर, ने संगोष्ठी की गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने दो दिवसीय इस आयोजन की शानदार सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने इनफ्लिबनेट केंद्र की सराहना की, जिसने नि:शुल्क ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से शोधार्थियों और विद्यार्थियों को लाभान्वित किया है। उन्होंने संगोष्ठी में हुई सभी प्रस्तुतियों को विशेष रूप से सराहा। तिवारी जी ने आयोजक टीम, विशेषकर हरीश चंद्र जी और डॉ. सुरभि की लगन और हिंदी के प्रति समर्पण की सराहना की, जिन्होंने बिना किसी समर्पित राजभाषा अधिकारी के पूरे कार्यक्रम को सफलतापूर्वक हिंदी माध्यम में संचालित किया।

इनफ्लिबनेट केंद्र की निदेशिका प्रोफेसर देविका मडाल्ली ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में सभी प्रतिभागियों और प्रायोजकों को धन्यवाद दिया और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाने की उम्मीद जताई।

मुख्य अतिथि श्री रणजीत कुमार झा ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन में 2047 तक विकसित भारत के प्रधानमंत्री के सपने को साकार करने के लिए सामूहिक प्रयास का आह्वान किया। उन्होंने भारत को 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने और प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के लिए सभी विभागों और व्यक्तियों के योगदान की आवश्यकता पर बल दिया। झा जी ने भारतीय बैंकों की आईटी क्षेत्र में प्रगति और यूपीआई जैसे स्वदेशी नवाचारों को वैश्विक स्तर पर एक मिसाल बताया। उन्होंने कहा कि देश में 167 अरबपतियों के बावजूद, 129 मिलियन लोग अभी भी गरीबी रेखा से नीचे हैं, और उन्हें ऊपर उठाना सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है। उन्होंने भ्रष्टाचार उन्मूलन और 'राष्ट्र प्रथम' की नीति पर काम करने का आग्रह किया। झा जी ने संगोष्ठियों के महत्व पर जोर दिया, क्योंकि वे विभिन्न विभागों के कार्यों और भविष्य की दिशा पर विचार-विमर्श का अवसर प्रदान करती हैं। उन्होंने कहा कि यदि हर व्यक्ति ईमानदारी और निष्ठा से अपना योगदान दे, तो 2047 में विकसित भारत का सपना समय से पहले भी पूरा हो सकता है।

अंत में, संगोष्ठी की सह-संयोजिका डॉ. सुरभि ने सभी गणमान्य अतिथियों, प्रायोजकों (केनरा बैंक, यूनियन बैंक, नराकास गांधीनगर, बैंक ऑफ बड़ौदा, नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन और विश्वांभी), प्रतिभागियों, पेपर प्रस्तुतकर्ताओं, पोस्टर प्रस्तुतकर्ताओं और सभी समिति सदस्यों, और प्रतिवेदकों का औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी के प्रयासों और समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। समापन के पश्चात प्रतिभागियों को उनके प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

निष्कर्ष

यह दो दिवसीय "अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी" अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल रही। इस मंच ने न केवल हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को एक नई दिशा प्रदान की, बल्कि "विकसित भारत-2047" के लक्ष्य को प्राप्त करने में विभिन्न सरकारी कार्यालयों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं की सामूहिक भूमिका को भी रेखांकित किया। संगोष्ठी में हुए विचार-मंथन से यह स्पष्ट हुआ कि प्रौद्योगिकी, पारंपरिक ज्ञान और भाषा का सामंजस्य ही भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की कुंजी है। यह आयोजन भविष्य में इस तरह के और अधिक संवादों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनेगा, जो नीति-निर्माण और जमीनी कार्यान्वयन के बीच की खाई को पाटने में सहायक सिद्ध होंगे।